उत्तर प्रदेश राज्य में FLN की प्रगति:
फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखिका: नीलू त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय शिक्षिका, उत्तर प्रदेश

पिछले चार वर्षों में FLN (Foundational Literacy and Numeracy) मिशन के साथ काम करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा – चुनौतियाँ भी देखीं और उन पर विजय पाने के रास्ते भी खोजे। मैं अपने कुछ अनुभव यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत कर रही हूँ।

शुरुआती चुनौतियाँ:

जब मैंने अपने स्कूल में FLN लक्ष्यों को लागू करना शुरू किया, तो मुझे सबसे पहले जिन दो बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा, वे थीं –

1. बच्चों की **नियमित उपस्थिति की कमी**
2. कक्षा में उनकी **कम भागीदारी**

इसके साथ ही, एक और चुनौती थी – शिक्षण सामग्री की समय पर उपलब्धता। अगर बच्चे स्कूल नहीं आएंगे या कक्षा में सक्रिय नहीं होंगे, तो उनका सीखना स्वाभाविक रूप से प्रभावित होगा।

मेरी रणनीतियाँ – समाधान की राह

इन समस्याओं से निपटने के लिए मैंने कई छोटे लेकिन असरदार कदम उठाए:

- **गतिविधि आधारित और उपचारात्मक शिक्षण** को अपनाया
- **अभिभावक-शिक्षक बैठकों (PTM)** और **SMC मीटिंग्स** का आयोजन किया
- स्वयं गाँव जाकर **जागरूकता अभियान** चलाया

इसके अलावा, बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए मैंने:

- अभिभावकों से **नियमित संपर्क** बनाए रखा
- उनके साथ **संबंधों को मजबूत करने वाली गतिविधियाँ** कीं
- **जनपद स्तर से संचालित बुलावा अभियान** में सक्रिय भागीदारी की

कक्षा में बच्चों को उनकी भाषा में बात करने का प्रयास किया, उन्हें अपनी बात कहने के भरपूर मौके दिए और प्रशंसा के माध्यम से प्रोत्साहित किया। जो बच्चे कम सक्रिय थे, उनके पीछे के कारणों को समझा और समाधान के रूप में व्यक्तिगत प्रयास किए।

संसाधनों की चुनौतियाँ और मेरा नवाचार

जब कभी शिक्षण सामग्री समय पर नहीं मिली, तब मैंने **PDF संसाधनों** का उपयोग किया। मैंने "मैंने क्या सीखा" जैसे **साप्ताहिक आकलन** बच्चों की कॉपियों में कराया और उसके आधार पर **रिमेडियल शिक्षण** किया।

साथ मिला – तो राह आसान हुई

मेरे इस सफर में मुझे प्रशिक्षकों और स्वयंसेवी संस्थाओं (जैसे LLF) से बहुत सहयोग मिला। उन्होंने न केवल कक्षा का अवलोकन किया, बल्कि मुझे **बेहतर शिक्षण के सुझाव** दिए, **डेमो करके दिखाएँ** और **शिक्षण सामग्री का प्रभावी उपयोग** सिखाया।

उपलब्धियाँ जो प्रेरणा बन गईं

इन प्रयासों से मुझे स्पष्ट परिणाम मिले:

- बच्चों की **उपस्थिति में सुधार** हुआ
- उनकी **सीखने की रुचि और भागीदारी** बढ़ी
- और सबसे खुशी की बात यह रही कि जो बच्चा पहले पढ़ाई में रुचि नहीं लेता था, वह अब खुद से पढ़ने और भाग लेने लगा है।

मेरी सीख और मेरा संदेश

इस पूरी यात्रा से मैंने यह सीखा कि **बच्चों के स्तर के अनुसार गतिविधियाँ चुनें,** उन्हें **सुनने और बोलने के अवसर दें**, और सबसे ज़रूरी – **उनके साथ आत्मीय रिश्ता बनाएं**।

मैं हमेशा यही प्रयास करती हूँ कि मेरी कक्षा में हर बच्चा **अपनी बात कहने में सहज महसूस करे**, और मैं भी **एक शिक्षक नहीं, एक दोस्त की तरह** उनके साथ जुड़ सकूँ। अगर हम बच्चों के साथ बच्चा बनकर काम करें, तो वे न केवल बेहतर सीखते हैं, बल्कि हर दिन खुश होकर स्कूल आते हैं।

लेखिका परिचय:

नीलू त्रिपाठी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश के एक प्राथमिक विद्यालय छितौनी काशी विद्यापीठ की सहायक शिक्षिका हैं। उन्होंने LLF के एक वर्षीय प्रारंभिक भाषा शिक्षण कोर्स में प्रतिभाग लिया है और वर्तमान में FLN मिशन के तहत बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान विकसित करने के लिए सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। वे “FLN संवाद : Voices from the Field” वेबिनार श्रृंखला के पहले एपिसोड की वक्ता भी रही हैं।